अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :-

सारांश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रुप में समझा जा सके। इस अध्याय में लघु शोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिए गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

पर्यावरण शिक्षा स्कूल में किस प्रकार देने चाहिए इसका भी विश्लेषण सुझाव में किया गया है।

5.2 अध्ययन के उददेश्य :-

1. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन करना।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओ में पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन करना।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की पर्यावरण जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की पर्यावरण संवर्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियो में सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन करना।

5.3 परिकल्पनाएँ :–

1. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.4 चर :–

शोध समस्या में निम्न चर हैं ।

1. **आश्रित चर**
   - (i) पर्यावरण जागरुकता
   - (ii) पर्यावरण संवर्धन
   - (iii) सामाजिक आर्थिक स्थिति
2. **स्वतंत्र चर**
   - (i) लिंग – छात्र / छात्रा
   - (ii) क्षेत्र – ग्रामीण / शहरी

5.5 न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्याय में महाराष्ट्र राज्य के अमरावती जिले के 2 शहरी एवं 1 ग्रामीण स्कूल लिए गये है । न्यादर्श को उददे्श्यपूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

इस शोधकार्य के अन्तर्गत तीन स्कूल से कुल 135 विद्यार्थियों का समावेश किया गया है। जिसमें 84 बालक तथा 51 बालिकाएं शामिल हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्न स्कूल का चयन किया गया था।

1. रामकृष्ण क्रीडा विद्यालय, अमरावती
2. श्री समर्थ विद्यालय, अमरावती
3. श्री ज्ञानदेव विद्यालय, पिंपलखुटा (अर्भल) जि. अमरावती

5.6 उपकरण :

सम्बन्धित अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु चार प्रकार के साधनों का विनियोग किया गया है।

1. पर्यावरण जागरुकता परीक्षण
2. पर्यावरण जागरुकता मार्गदर्शिका
3. पर्यावरण संवर्धन परीक्षण
4. सामाजिक आर्थिक परिसूची

1. **पर्यावरण जागरुकता परीक्षण** :- शोधकर्ता ने अपने निर्देशक की सहायता से पर्यावरण जागरुकता पर 30 प्रश्नों की बहुविध प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।
2. **पर्यावरण जागरुकता मार्गदर्शिका**:- शोधकर्ता ने अपने निर्देशक की सहायता से पर्यावरण जागरुकता परीक्षण के उपर एक मार्गदर्शिका बनाई उसमें पर्यावरण के बारे में विश्लेषण दिया गया था। उस मार्गदर्शिका का उपयोग किया गया है।

3. **पर्यावरण संवर्धन परीक्षणः–** शोधकर्ता ने अपने निर्देशक की सहायता से पर्यावरण संवर्धन पर 30 प्रश्नों की बहुविकल्प प्रश्नावली बनाई थी और उस प्रश्नावली का उपयोग शोध में किया गया है।
4. **सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूचीः–** एस.पी. कुलश्रेष्ठ के सामाजिक आर्थिक परिसूची के आधार पर शोधकर्ता ने संशोधित (नवीन) सामाजिक आर्थिक परिसूची बनाई और उसका उपयोग किया गया है।

5.7 प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण के लिए निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

1. मध्यमान, मानक विचलन तथा 't' परीक्षण का उपयोग किया गया।
2. χ^2 (काई स्क्वेअर) परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों के विश्लेष्ण हेतु किया गया।

5.8 समस्या के मुख्य परिणाम :–

1. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर है।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर है।
4. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण संवर्धन में सार्थक अन्तर है।
5. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में सार्थक अन्तर है।

6. कक्षा आठवीं के छात्रों में सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में काई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.9 निष्कर्ष :-

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन के परीक्षण लेने के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया कि छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया एवं छात्रों की अपेक्षा छात्राओं मे पर्यावरण जागरुकता कम पायी गयी और छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण संवर्धन में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

विद्यार्थियों को ग्रामीण एवं शहरी दो भागों में विभाजित किये जाने पर, पर्यावरण जागरुकता परीक्षण द्वारा ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरुकता ज्यादा पायी गयी। ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के पर्यावरण संवर्धन के परीक्षण द्वारा उन छात्रों में पर्यावरण संवर्धन सम्बन्धी सार्थक अन्तर पाया गया, तथा ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में पर्यावरण संवर्धन ज्यादा पाया गया।

विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में सार्थक अन्तर पाया गया।

छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में कोई प्रभाव दिखाई नहीं दिया गया ।

अंततः हम इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता को पर्यावरण संवर्धन की ओर बढ़ाने की आवश्यकता है।

5.10 सुझाव :–

1. विद्यार्थियों उसके पर्यावरण के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी दी जाए। उसके चारों ओर कौन कौन से पेड़ पौधे हैं, कौन कौन से पशु–पक्षी अक्सर दिखाई देते हैं, उनसे क्या लाभ एवं हानियाँ हैं, इन सबका समावेश करते हुए पाठ्यचर्या तैयार की जाए। उदाहरण के लिए अगर हम चट्टानों एवं मिट्टी के संबंध में पढा रहे हैं तो आसपास पायी जाने वाली चट्टानों के संबंध में जानकारी उन्हें दिखाकर संबंधित गुणों को बच्चों को अनुभव करा दिया जाए। वहां पर मिलने वाली मिट्टी के संबंध में जानकारी इसी तरह से देना भी इसी प्रक्रिया का अंग होगा। ''जीवित वस्तुएं'' पढाते समय अनजानी चीजों का जिक्र करने की अपेक्षा उन पशु–पक्षियों एवं पेड–पौधों से अवगत कराना अधिक महत्वपूर्ण लाभदायक और आवश्यक होगा जिनसे बच्चों का प्रतिदिन वास्ता पडता है ।
2. विद्यार्थियों को इसका ज्ञान कराना कि समय के अनुसार पर्यावरण में परिवर्तन होते हैं और हमारा उददेश्य इसको अपने लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाए रखना है और दूषित एवं नष्ट होने से बचाना है। हम और हमारा पर्यावरण एक दूसरे से प्रभावित होते हैं और एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है।
3. यह जानकारी देना कि हम सब एक लम्बी श्रंखला की कड़ी हैं जिसमें सब एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। समाज में किसान, जमादार, शिक्षक, पोस्टमेन, दूकानदार, दूधवाला, डाक्टर आदि हैं। यह सब एक दूसरे पर अनेक तरह से निर्भर करते हैं । किसान जो चीजें पैदा करता है वह समाज में अन्य लोगों के काम आती है। डाक्टर सब का इलाज करता है, पोस्टमेन सबके पत्रों को

पहुंचाता है और शिक्षक सबके बच्चों को पढाने का काम करता है किसी का काम दूसरे के बिना नहीं चल सकता है।

4. विद्यार्थियों को वैज्ञानिक तथ्यों की अधिक से अधिक जानकारी प्रयोगों और क्रियाओं के माध्यम से दी जाये। यह क्रियाऐं उन चीजों के माध्यम से की जाये जो कि विद्यार्थियों के पर्यावरण का अंग हों। उदाहरण के लिए यदि विद्यार्थियों को यह ज्ञान कराना है कि पहिये चीजों के एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करते हैं तो भारी चीज को पहिये के साथ और साधरणतया जमीन पर पहिये के बिना खींच कर और कांच की गोलियों पर रखकर खिसकाने का अनुभव बच्चों को देना और उससे उचित परिणाम निकलवाना अधिक लाभकारी होगा। साथ ही साथ उन चीजों से अवगत कराना जिनमें पहिये का उपयोग होता है और बच्चा उनको प्रतिदिन देखता है, युक्तिसंगत होगा।

5. पर्यावरणीय–अध्ययन की शुरुआत कक्षा एक और दो में बच्चों द्वारा अपने चारों ओर प्रतिदिन दिखाई देने वाली वस्तुओं का निरीक्षण (अवलोकन) करा कर की जा सकती हैं। यह वस्तुएं उनके भौतिक और सामाजिक वातावरण से ली जाए। उदाहरण के लिए तरह तरह के पक्षियों की चोंच का अवलोकन कर उन्हें चित्रबद्ध किया जा सकता है। जो लोग हमको दैनिक जीवन में याद करते हैं उनके कार्यों की तालिकाबद्ध करके इस पर चर्चा कर सकते हैं।

इस तरह से पर्यावरणीय अध्ययन एक ऐसा उपागम है जिसके द्वारा भौतिक और सामाजिक पर्यावरण के आधार पर उचित अभिवृत्तियों का विकास होता है और वैज्ञानिक एवं अन्य प्रकार के तथ्यों को लिपिबद्ध करके उनकी विवेचना करने की कुशलता आती है। इस उपागम का उपयोग विज्ञान, गणित, समाजशास्त्र, भाषा कला, संगीत इत्यादि के अध्ययन अध्यापन में किया जा सकता है।

5.11 भविष्य के लिए शोध सुझाव

1. प्रायमरी स्कूल के विद्यार्थियों मे पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन
2. आदिवासी एवं गैरआदिवासी विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन
3. विद्यार्थियों में पर्यावरण संवर्धन के लिए भ्रमण विधि महत्वपूर्ण है । इसके बारे में अध्ययन किया जा सकता है।
4. औद्यागिक एवं सामान्य क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन
5. स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा एक विषय के रुप में प्रस्तुत किये जाने पर अध्ययन किया जा सकता है।
6. प्रसार माध्यमों के द्वारा भी पर्यावरण शिक्षा को सिखाये जाने पर अध्ययन किया जा सकता है।

5.12 पर्यावरणवादी :–

भारत में कुछ व्यक्तियों ने पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन बढाने का प्रयास किया है। उन्होंने पर्यावरण को असंतुलन की ओर ध्यान आकर्षित करके पर्यावरण के संरक्षण हेतु काफी प्रयास किये हैं। उन्होंने समाज को पर्यावरण संवर्धन का संदेश दिया है इस संदेश क्षेत्र में निम्नलिखित व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया है।

1. सुन्दरलाल बहुगुणा :

'चिपको आन्दोलन' वनों की सुरक्षा की दिशा में उठाया गया प्रगतिशील कदम है। इसका मुख्य उददेश्य जंगलों के ठेकेदारों से वृक्षों की रक्षा करना अर्थात् वृक्षों को कटने से रोकना है। इस आन्दोलन को सुन्दरलाल बहुगुणा

ने चलाया। पर्यावरण का हास होने से सुन्दरलाल बहुगुणा ने रोका। उनको 1995 में पद्म श्री पुरस्कार मिला।

2. **चण्डी प्रसाद भट्ट :**

'चिपको आन्दोलन' इसी प्रकार का आन्दोलन कर्नाटक में चलाया गया। पर्यावरण संतुलित रहने के लिए वृक्ष कटाई को चण्डी प्रसाद भट्ट ने विरोध किया और कर्नाटक में पर्यावरण अच्छा रहने के लिए काम किया है। उस काम के लिए उन्हें 'मेगसेस पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है।

3. **श्रीमती मेनका गांधीः**

श्रीमती मेनका गांधी वन्य जीव प्राणी संरक्षण के लिए भारत में काम कर रहीं हैं। वन्य जीव प्राणी हत्या के खिलाफ आन्दोलन करके वन्य जीव का संरक्षण देने का काम श्रीमती मेनका गांधी कर रही है।

4. **श्री राजेन्द्र सिंह :**

राजस्थान के मरुस्थल क्षेत्र में बरसात के पानी का संवर्धन करके जमीन में के पानी का स्तर को बढ़ाने का काम श्री राजेन्द्र सिंह ने किया है। इस काम के लिए सरकार ने उन्हें 'रमन मेगसेस पुरस्कार' से सम्मानित किया है

5. **मेघा पाटकर :**

'नर्मदा बचाओ आन्दोलन' मेघा पाटकर ने महाराष्ट्र में चलाया है। नर्मदा सरोवर होने से 40,332 हेक्टर में हरे भरे जंगल पानी में डूब जायेंगे और वहां की पर्यावरण को नुकसान हो जायेगा। यह वन को वैसा का वैसा ही रहने दो

यहां के पर्यावरण को असंतुलित नहीं बनाओ इसलिये मेधा पाटकर ने यह आन्दोलन किया है।

6. **श्री बाबा आमटे :**

श्री बाबा आमटे जैसे पर्यावरणविदों द्वारा नर्मदा पर बनने वाले बाँधों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शनों के माध्यम से हजारों आदिवासियों में बडी परियोजनाओं द्वारा हो रहे पर्यावरण असंतुलन की ओर जनता और सरकार का ध्यान आकर्षित किया।

7. **डॉ. शिवाजी राव :**

टहरी क्षेत्र का पर्यावरण बचाने के लिए डॉ. शिवाजी राव ने प्रयत्न किये हैं।

9. **श्री मोहन धारिया :**

'वनराई' यह संस्था के अर्न्तगत वृक्षारोपण करके वन का संरक्षण करने में मोहन धारिया ने अपना योगदान दिया है।